न्यूज़ टुडे

सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के अनुसार सीमा-पार आतंकवाद के दौर में महात्मा गांधी के सिद्धांत अधिक प्रासंगिक हैं

अहिंसा और सत्याग्रह (सत्य तक पहुंचने का दृढ़ संकल्प) पर गांधीजी के विचार:

- **अहिंसा का विस्तार:** उनका मानना था कि हिंसा **किसी भी धर्म का सिद्धांत नहीं है,** जबकि अधिकांश मामलों में **अहिंसा सभी के लिए अनिवार्य** है। केवल कुछ मामलों में ही हिंसा की अनुमति दी जा सकती है।
  - उनका मानना था कि **हिंसा करके कभी भी सत्य का प्रचार नहीं** किया जा सकता।
- उन्होंने **यंग इंडिया** में लिखे अपने लेख **'द डॉक्ट्रिन ऑफ द स्वॉर्ड'** में लिखा था कि:
  - "मैं मानता हूं कि जहां **कायरता और हिंसा** के बीच चुनाव करना हो, वहां मैं हिंसा की सलाह दूंगा। मैं चाहूंगा कि **भारत अपने सम्मान की रक्षा के लिए हथियारों का सहारा** ले, बजाय इसके कि वह कायरतापूर्ण तरीके से अपने **अपमान का असहाय गवाह** बने या बना रहे।"

वर्तमान समय में सीमा-पार आतंकवाद के संदर्भ में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता

- **ऑपरेशन सिंदूर:** पहलगाम में हुए आतंकी हमले के खिलाफ भारत की प्रतिक्रिया, सीमा-पार आतंकवाद का जवाब देने, उसे रोकने, उसे आगे न बढ़ने देने और उसका शमन करने के भारत के अधिकार पर आधारित थी।
- **भारत के सुरक्षा सिद्धांत के तीन प्रमुख स्तंभ:** इसमें भारत की शर्तों पर निर्णायक जवाबी कार्रवाई, परमाणु ब्लैकमेल के प्रति शून्य सहिष्णुता तथा आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों के बीच कोई भेद नहीं करना शामिल है।
- **सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल:** राज्य प्रायोजित आतंकवाद की सच्चाई को सामने लाने तथा हिंसा के खिलाफ वैश्विक प्रतिक्रिया को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय तक पहुंच बनाना।

निष्कर्ष

भारत ने हमेशा **वसुधैव कुटुम्बकम, परमाणु हथियारों का पहले उपयोग नहीं करने तथा वैश्विक शांति को बढ़ावा देने** जैसे सिद्धांतों के माध्यम से **गांधीजी के सिद्धांतों** का अनुसरण किया है।

भारी उद्योग मंत्रालय ने "भारत में इलेक्ट्रिक यात्री कारों के विनिर्माण को बढ़ावा देने की योजना" (SPMEPCI) के लिए दिशा-निर्देश अधिसूचित किए

योजना की मुख्य विशेषताओं पर एक नजर

- **उद्देश्य:**
  - भारत में **इलेक्ट्रिक यात्री कारों (e-4W) के घरेलू विनिर्माण** को बढ़ावा देना।
  - **भारत को ऑटोमोटिव नवाचार और विनिर्माण के लिए एक वैश्विक केंद्र** के रूप में स्थापित करना।
- **पात्र परियोजनाएँ:** पूरे भारत में नए संयंत्र, मशीनरी, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर, उपकरण और संबंधित उपयोगिताओं पर किया गया व्यय।
  - सेकेंड हैंड/ ठीक करके नए जैसा बनाया गया संयंत्र, मशीनरी आदि पर किया गया व्यय योग्य नहीं होगा।
- **आवेदकों को लाभ:**
  - **सीमा शुल्क रियायतें:** 5 वर्षों तक रियायत, जो घरेलू मूल्य संवर्धन (DVA) लक्ष्य को पूरा करने से संबद्ध होगी।
  - **आयात लाभ:** कुछ शर्तों के साथ पूरी तरह से निर्मित इलेक्ट्रिक कारों या CBUs (एक वाहन जो पूरी तरह से असेंबल किया गया है) को आयात करने की अनुमति है।
- **आवेदकों पर दायित्व**
  - स्वीकृत आवेदकों को भारत में **e-4W विनिर्माण की फैसिलिटी** स्थापित करनी होगी और इसे **स्वीकृति से 3 साल के भीतर** चालू होना चाहिए।
  - **न्यूनतम निवेश:** 4,150 करोड़ रुपये।
  - **DVA लक्ष्य:** 3 साल तक न्यूनतम 25% DVA और 5 साल तक 50%.
  - **अनिवार्य बैंक गारंटी:** विनिर्माण प्रतिष्ठान/ प्रतिष्ठानों की स्थापना और DVA की उपलब्धि से संबंधित आवेदक की प्रतिबद्धता भारत में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक से बैंक गारंटी द्वारा समर्थित होगी।

आवेदकों के लिए पात्रता

विवरण	आवश्यकता
ग्लोबल ग्रुप* राजस्व (ऑटोमोटिव विनिर्माण से)	न्यूनतम **10,000 करोड़ रुपये** (नवीनतम ऑडिट)
कंपनी या उसके समूह* कंपनी/ कंपनियों का अचल परिसंपत्तियों में वैश्विक निवेश	न्यूनतम **3,000 करोड़ रुपये** (नवीनतम ऑडिट)

नोट: समूह कंपनी से तात्पर्य उन संस्थाओं से है, जो एक दूसरे में कम-से-कम 26% वोटिंग राइट्स रखती हैं।

भारत का ऑटोमोटिव सेक्टर
गतिशीलता के भविष्य को गति प्रदान करना

मुख्य तथ्य

- 3rd भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार है
- ₹ बाजार का आकार: 12.5 लाख करोड़ रुपये (वर्तमान)
  अपेक्षित: 2030 तक 24.9 लाख करोड़ रुपये
  50% वृद्धि अपेक्षित
- 7.1% GDP 7.1% GDP: भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 7.1% का योगदान देता है
- भारत आंतरिक दहन इंजन (ICE) वाहनों से इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) की ओर वैश्विक बदलाव का नेतृत्व कर सकता है

भारत के ऑटो सेक्टर के विकास के चालक

- ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट्स के लिए उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन योजना (PLI-ऑटो)।
- एडवांस्ड केमिस्ट्री सेल के लिए PLI योजना (PLI-ACC)।
- इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाना और उनका विनिर्माण करना (FAME)।
- राज्य ईवी नीतियाँ।

भारत और जापान समुद्री संबंधों को गहन करने पर सहमत हुए

भारत और जापान एक संधारणीय एवं पारस्परिक रूप से लाभकारी भविष्य के लिए समुद्री संबंधों को गहन करने पर सहमत हुए हैं।

समुद्री सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

- **स्मार्ट आइलैंड्स:** अंडमान निकोबार और लक्षद्वीप को निम्नलिखित के माध्यम से 'स्मार्ट आइलैंड्स' में परिवर्तित किया जाएगा:
  - स्थायी प्रौद्योगिकियां (नवीकरणीय ऊर्जा, स्मार्ट मोबिलिटी आदि);
  - आपदा-रोधी अवसंरचना; और
  - डिजिटल कनेक्टिविटी, इत्यादि।
- **समुद्री सहयोग और निवेश:** भारत जापान के जहाज निर्माण के अनुभव तथा बंदरगाहों और समुद्री औद्योगिक क्लस्टरों के सह-विकास से लाभ उठा सकता है।
  - भारत का लक्ष्य जापान के साथ 2027 तक 3 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हासिल करना है।
  - भारत आंध्र प्रदेश में इमाबारी शिपबिल्डिंग में ग्रीनफील्ड निवेश की भी योजना बना रहा है।
- **समुद्री विरासत और सांस्कृतिक सहयोग:** भारत ने गुजरात के लोथल में प्रस्तावित राष्ट्रीय समुद्री विरासत संग्रहालय (NMHC) के विकास के लिए जापान से सहयोग की इच्छा प्रकट की है।
  - NMHC का उद्देश्य भारत के समृद्ध समुद्री इतिहास और विरासत को प्रदर्शित करना है। यह समुद्री क्षेत्रक में विरासत पर्यटन, शिक्षा और अनुसंधान के लिए एक विश्व स्तरीय केंद्र के रूप में कार्य करेगा।
- **मानव संसाधनों का कौशल विकास:** भारत के लगभग 1.54 लाख प्रशिक्षित नाविक जापान के समुद्री कार्यबल के रूप में कार्य कर सकते हैं।

भारत-जापान समुद्री सहयोग का महत्त्व

- **व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण:** ऊर्जा की कमी के कारण भारत और जापान समुद्री व्यापार पर बहुत अधिक निर्भर हैं। गौरतलब है कि भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का 97% और जापान का लगभग पूरा व्यापार समुद्र पर आधारित है।
- **चीन का सामरिक प्रतिसंतुलन:** दोनों देश हिंद महासागर में चीन की बढ़ती आक्रामकता को लेकर चिंतित हैं।
- **क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना:** भारत-जापान का समुद्री सहयोग निम्नलिखित क्षेत्रीय पहलों को भी मजबूती देता है जैसे:
  - क्वाड;
  - आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (SCRI);
  - एशिया-अफ्रीका विकास गलियारा (AAGC);
  - अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA);
  - आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (CDRI);
  - उद्योग परिवर्तन के लिए नेतृत्व समूह (LeadIT) आदि।
- **भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण का समर्थन:** जापान, भारत की "एक्ट ईस्ट नीति", "मैरीटाइम इंडिया विज़न 2030" और "समुद्री अमृत काल विज़न 2047" को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है।

प्रधान मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय वायु परिवहन संघ (IATA) की 81वीं वार्षिक आम बैठक में भारत के विमानन क्षेत्रक की प्रगति को रेखांकित किया

- **भारत के विमानन क्षेत्रक की स्थिति:** भारत के विमानन क्षेत्रक के निम्नलिखित 3 मजबूत स्तंभ हैं:
  - विशाल बाजार;
  - AI, स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रकों में अभिरुचि रखने वालों की अधिक संख्या और अधिक प्रतिभा; तथा
  - अनुकूल नीतियां।
- **महिलाओं की भागीदारी:** भारत की 15% पायलट महिलाएं हैं, जो 5% के वैश्विक औसत से काफी अधिक है।
- **वैश्विक मानकों के अनुरूप विमानन कानून:** भारत के विमानन कानून अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन (ICAO) के नियमों; दिल्ली घोषणा-पत्र (क्षेत्रीय सहयोग) तथा 'ओपन स्काई एवं ग्लोबल कनेक्टिविटी के लिए शिकागो कन्वेंशन' के सिद्धांतों के अनुरूप हैं।
- **वैश्विक विमानन में मूल्य श्रृंखला का नेतृत्वकर्ता:** डिजाइन से लेकर डिलीवरी तक – भारत "मेक इन इंडिया" और "डिज़ाइन इन इंडिया" जैसे अभियानों के तहत कंपनियों को MRO (रखरखाव, मरम्मत एवं कायापलट) व्यवसाय में निवेश के लिए प्रोत्साहित करता है।

विमानन क्षेत्रक को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी पहलें:

- **क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना– उड़े देश का आम नागरिक (RCS-UDAN):** इस योजना के तहत देश में संचालित हवाई अड्डों की संख्या 2014 के 74 से बढ़कर 2024 में 157 हो गई। यह संख्या बढ़ाकर 2047 तक 350-400 तक करने का लक्ष्य है।
- **डिजी यात्रा ऐप:** यह हवाई अड्डों पर बिना किसी बाधा के प्रवेश सुनिश्चित करके विमान यात्रा अनुभव को बेहतर बनाता है।
- **विमान वस्तु हित संरक्षण विधेयक, 2025 (Protection of Interest in Aircraft Objects Bill):** इसका उद्देश्य भारत के विमानन क्षेत्रक को वैश्विक मानकों के अनुरूप लाना और वित्तीय डिफॉल्ट की स्थिति में जवाबदेही सुनिश्चित करना है।

अंतर्राष्ट्रीय वायु परिवहन संघ (IATA) के बारे में:

- **स्थापना:** IATA की स्थापना अप्रैल 1945 में क्यूबा की राजधानी हवाना में शिकागो कन्वेंशन (1944) के तहत हुई थी। इस संगठन को पहले इंटरनेशनल एयर ट्रैफिक एसोसिएशन कहा जाता था।
- **मुख्यालय:** कनाडा के मांट्रियल में स्थित है। इसका एक कार्यकारी कार्यालय स्विट्जरलैंड के जेनेवा में स्थित है।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भारतजेन शिखर सम्मेलन में 'भारत जेन' (BharatGen) लॉन्च किया

'भारतजेन शिखर सम्मेलन' **भारत का सबसे बड़ा 'जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और लार्ज लैंग्वेज मॉडल (LLM) समिट एवं हैकथॉन'** है।

भारतजेन के बारे में

- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी पहल:**
  - यह भारत में अपनी तरह का पहला और स्वदेश में विकसित **AI-आधारित मल्टीमॉडल लार्ज लैंग्वेज मॉडल** है। यह **भारतीय भाषाओं के लिए तैयार** किया गया है।
  - इसे एक **गैर-लाभकारी कंपनी** के रूप में लॉन्च किया गया है। इसे भारत सरकार के **विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से वित्त-पोषण** प्राप्त होगा।
  - इसे **नेशनल इंटरडिसिप्लिनरी साइबर-फिजिकल सिस्टम्स मिशन (NM-ICPS)** के तहत विकसित किया गया है॥
  - इसे **IIT बॉम्बे में टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब (TIH) फाउंडेशन फॉर IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) और IoE (इंटरनेट ऑफ एवरीथिंग) के माध्यम** से लागू किया जा रहा है।
- **चार प्रमुख लक्ष्य:**
  - **भारत-केंद्रित फाउंडेशनल LLM मॉडल का निर्माण:** यह मॉडल भारतीय भाषाओं, संस्कृति और परंपरा पर केंद्रित होगा।
  - **भारत डेटा सागर:** यह मॉडल निर्माण के लिए आवश्यक उच्च गुणवत्ता वाले भारतीय डेटा को केंद्रीकृत करेगा।
  - **स्टार्ट-अप इकोसिस्टम और इनोवेशन:** यह भारत के लिए नए AI एप्लीकेशन्स बनाने हेतु उद्यमियों को टूल्स, मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाएगा॥
  - **कौशल विकास और क्षमता निर्माण:** फेलोशिप, हैकथॉन तथा अलग-अलग पाठ्यक्रमों के माध्यम से **भारत की AI प्रतिभा को मजबूत** बनाएगा। साथ ही, यह भारत को एक **वैश्विक नवाचार केंद्र** के रूप में स्थापित भी करेगा।

मल्टीमॉडल LLMs के बारे में

- मल्टीमॉडल LLMs (MLLMs) लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स हैं, जिन्हें **टेक्स्ट और गैर-टेक्स्ट डेटा** पर प्रशिक्षित किया जाता है। ऐसे डेटा में **इमेज, ऑडियो एवं वीडियो** शामिल हैं।
- ये मॉडल्स मनुष्य की भाषा और अन्य जटिल डेटा प्रकारों को समझने एवं व्याख्या करने के लिए **मशीन लर्निंग का उपयोग** करते हैं।
- मल्टीमॉडल LLMs वास्तव में **पारंपरिक यूनिमॉडल मॉडल्स से अधिक एडवांस** हैं। यूनिमॉडल (जैसे चैटजीपीटी का पुराना संस्करण) अक्सर तब असंगत उत्तर देते हैं, जब अलग-अलग माध्यमों के इनपुट से उन्हें प्रशिक्षित किया गया होता है।

अन्य सुर्ख़ियां

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन

सीमा सुरक्षा बल (BSF) की 25 महिला कर्मियों के एक समूह को कांगो में **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन** के तहत तैनात किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन क्या है?

- **उद्भव:** इसकी शुरुआत 1948 में मध्य-पूर्व में युद्ध विराम की निगरानी के लिए **संयुक्त राष्ट्र युद्धविराम पर्यवेक्षण संगठन (UNTSO)** की स्थापना के साथ हुई।
- **तीन मूलभूत सिद्धांत:** पक्षकारों की सहमति, निष्पक्षता और बल का प्रयोग केवल आत्मरक्षा और मिशन के लक्ष्यों की रक्षा के लिए।
- **शांति स्थापना के प्रमुख घटक:** राजनीतिक प्रक्रियाओं की बहाली को सुगम बनाना, नागरिकों की सुरक्षा, चुनाव में सहायता करना, आदि।
- **भारत की भूमिका:** 1950 के दशक से, **भारत ने 50 से अधिक शांति मिशनों में 2,90,000 से अधिक शांति सैनिक** भेजे हैं, जिससे वह संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा प्रयासों में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बन गया है।

पश्चिम अफ्रीकी देशों का आर्थिक समुदाय (ECOWAS)

इकोवास (ECOWAS) की **50वीं वर्षगांठ पर;** संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक राजनयिकों ने **इकोवास को अफ्रीका के क्षेत्रीय एकीकरण के मॉडल के रूप में सराहा।**

इकोवास (ECOWAS) के बारे में:

- **स्थापना:** ECOWAS की **स्थापना 1975 में** हुई। 15 देशों ने **लागोस संधि पर हस्ताक्षर करके** इसकी शुरुआत की थी।
- **मुख्यालय:** अबुजा (नाइजीरिया)।
- **सदस्य:** बेनिन, काबो वर्डे, कोटे डी आइवर, गैम्बिया, घाना, गिनी, गिनी बिसाऊ, लाइबेरिया, नाइजीरिया, सिएरा लियोन, सेनेगल और टोगो।
- **उद्देश्य:** ECOWAS का मुख्य उद्देश्य पश्चिम अफ्रीका में आर्थिक संघ की स्थापना के लिए सहयोग और एकीकरण को बढ़ावा देना है, जिससे:
  - इसके लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो,
  - आर्थिक स्थिरता बनाए रखी जा सके,
  - सदस्य देशों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ किया जा सके, और
  - अफ्रीकी महाद्वीप की प्रगति और विकास में योगदान दिया जा सके।

शांगरी-ला डायलॉग

सिंगापुर में वार्षिक शांगरी-ला डायलॉग आयोजित किया जा रहा है।

शांगरी-ला डायलॉग के बारे में

- **उद्भव: शीत युद्ध के बाद के बहुपक्षवाद** और **9/11 की घटना** के बाद विकसित हो रही रक्षा कूटनीति से प्रेरित होकर, इस संवाद या डायलॉग की **स्थापना 2002 में** हुई थी।
- **नामकरण:** इस डायलॉग का नाम उस शांगरी-ला होटल के नाम पर रखा गया है जहाँ **इसका पहला सम्मेलन आयोजित** हुआ था।
- **आयोजक:** इसे लंदन स्थित **इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज (IISS)** द्वारा सिंगापुर सरकार के सहयोग से आयोजित किया जाता है।
- **प्रारूप:** यह **"1.5 ट्रैक" आधारित बहुपक्षीय रक्षा संवाद** है। इसमें **सरकारी (आधिकारिक) और गैर-सरकारी (अनौपचारिक), दोनों प्रकार की भागीदारी** देखी जाती है।
- **उद्देश्य:** यह फोरम **एशिया-प्रशांत, उत्तर अमेरिका, यूरोप और मध्य-पूर्व** की सरकारों के मंत्रियों, रक्षा प्रमुखों और नीति निर्माताओं को **क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करने और नीतिगत क़दमों को साझा करने** का अवसर प्रदान करता है।

सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना

हाल ही में "सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना" की **समीक्षा बैठक** आयोजित हुई।

- इस बैठक में **प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) की आय बढ़ाने के साथ-साथ ग्रामीण रोजगार के अवसर पैदा करने के उद्देश्य** से इस योजना पर विचार किया गया।

'सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना' के बारे में:

- **कार्यान्वयन मंत्रालय:** केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय।
- **कार्यान्वयन एजेंसियां:** राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC), नाबार्ड, भारतीय खाद्य निगम (FCI), केंद्रीय भंडारण निगम (CWC) आदि।
- **योजना का महत्व:**
  - **खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा:** विकेंद्रीकृत भंडारण से खाद्यान्न की बर्बादी कम होगी, जिससे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा बढ़ेगी।
  - **ऋण लेना आसान बनाना:** किसान PACS में निर्मित गोदामों में अपनी उपज का भंडारण कर सकेंगे और इस भंडारित अनाज के बदले अगले फसल चक्र के लिए ऋण प्राप्त कर सकेंगे।

नशीली दवाओं की मांग में कमी के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPDDR)

केंद्रीय **सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय** (MoSJE) ने NAPDDR के तहत **वंचित जिलों में जिला नशा मुक्ति केंद्र (DDACs) स्थापित करने के लिए प्रस्ताव** आमंत्रित किए हैं।

NAPDDR के बारे में

- **उद्देश्य:** नशे की लत की रोकथाम, नशा मुक्ति और पुनर्वास के माध्यम से मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की समस्या का समाधान करना।
- **योजना का प्रकार:** केंद्र प्रायोजित योजना
- **मुख्य रणनीतियाँ:**
  - नशे की लत की बुराइयों के बारे में शिक्षा और जागरूकता प्रदान करना,
  - नशा करने वालों का उपचार और साथ में पीड़ित व्यक्ति और उसके परिवार का पुनर्वास,
  - विभिन्न स्तरों पर क्षमता निर्माण करना।
- **वित्तीय सहायता निम्नलिखित को प्रदान की जाती है:**
  - **राज्य/केंद्र शासित प्रदेश को:** जागरूकता और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के लिए;
  - **गैर सरकारी संगठन/स्वैच्छिक संगठन को** निम्नलिखित के संचालन के लिए:
    - एकीकृत पुनर्वास केंद्र (IRCAs)
    - सामुदायिक साथियों द्वारा संचालित हस्तक्षेप (CPLI)
    - आउटरीच और ड्रॉप-इन केंद्र (ODIC)
    - जिला नशा-मुक्ति केंद्र (DDACs)
  - **सरकारी अस्पताल को** - व्यसन उपचार सुविधाएं (ATF) स्थापित करने के लिए
- **योजना की अवधि:** 2018-2025 तक।

माउंट एटना

हाल ही में इटली के सिसली द्वीप पर स्थित माउंट एटना ज्वालामुखी में विस्फोट हुआ।

माउंट एटना के बारे में

- यह **भूमध्य सागर के द्वीपों में सबसे ऊँचा पर्वत** है। यह दुनिया का **सबसे सक्रिय स्ट्रैटोवोल्केनो** है और **यूरोप का सबसे बड़ा सक्रिय ज्वालामुखी** भी है।
  - **स्ट्रैटोवोल्केनो (मिश्रित ज्वालामुखी)** बेसाल्ट की तुलना में उस लावा से बनते हैं जो ठंडा और चिपचिपा होता है, जिससे इनके विस्फोट अधिक प्रचंड होते हैं।
- **विशेषताएँ:** शिखर क्रेटर, सिंडर कोन, लावा प्रवाह और वैले डे बोव अवसाद आदि।
- यह ज्वालामुखी लगभग **2700 वर्षों के दर्ज इतिहास** के साथ विश्व के सबसे पुराने प्रलेखित ज्वालामुखीय गतिविधियों में से एक है।
- यह **यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल** है।

फाइटोप्लांकटन

एक अध्ययन के अनुसार, समुद्रों में आयरन की अत्यधिक मात्रा से फाइटोप्लांकटन की अत्यधिक वृद्धि होती है। इस वजह से पोषक तत्वों की खपत की दर तेज हो जाती है और शीघ्र ही पोषक तत्वों की कमी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

फाइटोप्लांकटन के बारे में

- ये सूक्ष्म जीव होते हैं जो **खारे और मीठे दोनों तरह के पानी** में पाए जाते हैं।
- **इनमें क्लोरोफिल होता** है और इन्हें जीवित रहने व वृद्धि करने के लिए **सूर्य का प्रकाश तथा आयरन, नाइट्रेट, फॉस्फेट, सल्फर जैसे अकार्बनिक पोषक तत्वों की आवश्यकता** होती है।
- **प्रकार:** बैक्टीरिया, प्रोटिस्ट, एकल-कोशिका वाले पौधे (सायनोबैक्टीरिया, डायटम, डाइनोफ्लैगलेट्स, हरे शैवाल, आदि)
- **महत्त्व:**
  - **खाद्य श्रृंखला:** ये **प्राथमिक उत्पादकों के रूप में कार्य** करते हैं।
  - **जैविक कार्बन पंप:** वायुमंडल से महासागर की ओर **कार्बन डाइऑक्साइड के स्थानांतरण का अधिकांश कार्य इन्हीं के द्वारा किया** जाता है।
- **जोखिम:** इनका अत्यधिक प्रसार **हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन (जैसे रेड टाइड्स) का कारण** बन सकता है, जिससे ऐसे विषैले पदार्थ निकल सकते हैं जो समुद्री और मानव जीवन दोनों के लिए खतरनाक हैं।

खीर भवानी मंदिर

ज्येष्ठ अष्टमी पर प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला खीर भवानी उत्सव, जम्मू और कश्मीर के गंदेरबल स्थित खीर भवानी मंदिर में मनाया जा रहा है।

खीर भवानी मंदिर के बारे में

- **अवस्थिति:** श्रीनगर के निकट।
- **प्रमुख देवी:** यह मंदिर देवी दुर्गा के एक रूप, **देवी रागन्या को समर्पित** है।
- इसका निर्माण **महाराजा प्रताप सिंह ने 1912 के आस-पास** कराया था। बाद में महाराजा हरि सिंह ने मंदिर का अलंकरण और पुनर्निर्माण कराया।
- मंदिर के केंद्र में **एक षट्कोणीय झरना है, जो अपने पवित्र जल के लिए प्रसिद्ध** है।
- इस मंदिर और उत्सव का नाम **'खीर' नामक मिठाई पर रखा गया है, जो श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में वितरित** की जाती है।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

पैराग्वे (राजधानी: असुनसियन)

पैराग्वे के राष्ट्रपति ने भारत की यात्रा की।

भौगोलिक अवस्थिति:

- **अवस्थिति:** यह दक्षिण-मध्य दक्षिण अमेरिका में स्थित एक **स्थलरुद्ध** देश है।
- **स्थलीय सीमाएं:** इसके उत्तर-पश्चिम और उत्तर में बोलीविया, **उत्तर-पूर्व और पूर्व में ब्राजील,** दक्षिण-पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम में अर्जेंटीना हैं।

भौगोलिक विशेषताएं:

- **महत्वपूर्ण नदियाँ:** पैराग्वे, अपा, परना और पिलकोमायो।
  - ये नदियां अटलांटिक महासागर तक पहुँच प्रदान करती हैं और इन पर अनेक **जलविद्युत संयंत्र** स्थापित किए गए हैं, जिससे **पैराग्वे दुनिया के सबसे बड़े जलविद्युत निर्यातकों** में से एक है।
- **मकर रेखा इसके मध्य** से गुजरती है।
- **सबसे ऊँची चोटी:** सेरो पेरो